विजय-मन्त्र

समभाव-समदृष्टि की
युक्ति अपनाकर परस्पर
कुशलता से सजन भाव
का वर्त-वर्ताव करते
हुए धर सतयुग बना व
सजन पुरुष बन
परमपद प्राप्त करने हेतु

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।
शब्द है गुरु, शरीर नहीं है।
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा।
सजनों इन विचारों को हृदय में धारण करो।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड
फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)

सजनों जैसा कि हम सब जानते ही हैं कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हर मानव को उसके जीवन के प्रधान उद्देश्य यानि जीवन के परम पुरुषार्थों यथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को युक्तिसंगत सिद्ध करने के प्रति जाग्रत करने हेतु दिनाँक 26 जनवरी 2014 को ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि के स्कूल का शुभारंभ किया गया।

निःसंदेह इस प्रयत्न द्वारा सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनानुसार सभी को अपना ख़्याल मूलमंत्र शब्द गुरु संग जोड़ व ध्यान स्थिरता द्वारा, अपने वास्तविक ब्रह्म स्वरूप का मानसिक प्रत्यक्ष करते हुए आत्मविश्वास के साथ उसी विषय के ग्रहण में बराबर, तब तक तत्पर रहने के लिए प्रेरित किया गया जब तक बाह्य इन्द्रियों के प्रयोग के बिना वह मन के भावों के रूप में स्थित

नहीं हो जाता और भावना के माध्यम से हृदय में उतर कर उसे सचखंड नहीं बना देता। सजनों यह अपने आप में ब्रह्म सत्ता के ग्रहण द्वारा, सत्याचरण को अपने स्वभाव के अंतर्गत कर, विचार, सत्-ज़बान, एक दृष्टि, एकता, एक अवस्था में स्थित हो, संकल्प का रोना-झुखना मिटाने की बात थी अर्थात् कलुकाल के दूषित भाव-स्वभाव व पोशाक को त्याग कर, सतवस्तु के पावन

भाव-स्वभाव व आचार-संहिता को अपनाने की बात थी ताकि हर सजन सहजता से अपने असली तत्व यानि 'आत्मा में है परमात्मा' का बोध कर 'विचार ईश्वर है अपना आप' के भाव पर स्थिर बने रह अपना व समुच्चय जगत का उद्धार करने के योग्य बन सके।

इस प्रकार सजनों यह एक सुनहरी अवसर था, स्वार्थपर अविचार युक्त कवलड़ा रास्ता

छोड़, परमार्थ के सरल व निष्कंटक विचारयुक्त मार्ग पर सहजता से अग्रसर होने का व एक प्रकाशित बुद्धि इंसान की तरह सत्यनिष्ठा व धर्मपरायणता से अपने जीवन के समस्त कर्त्तव्यों का संपादन निष्कामता व प्रसन्नचित्तता से करते हुए, अपना घर सतयुग बना, परम अर्थ सिद्ध करने का। इसी परम अर्थ की समयबद्ध सिद्धि हेतु ही सजनों वर्ष 2014 से ध्यान-कक्ष में, प्रत्येक रविवार को, शास्त्रविहित

समभाव-समदृष्टि व सजन-भाव को वर्त-वर्ताव में लाने की समुचित युक्ति बताई गई ताकि हर सजन संकल्प रहित होकर, निर्दोष जीवन जीने में पूर्णतः कामयाब हो सके। इस विषय में सजनों गत चार वर्षों से ध्यान-कक्ष में सिलसिलेवार चल रही इस समुचित क्रिया का जो परिणाम सामने आया है, उससे ज्ञात होता है कि कलुकाल के स्वभावों में उलझे हुए असंख्य इंसानों में से, कुछ एक विरले